शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संत रविदास के काव्य में अलंकार विधान

डॉ. सुरेश कुमार
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
उकलाना मण्डी
हिसार, हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

अलंकार का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। अलंकार वाणी के विभूषण है। संत रविदास ने अपनी वाणी में अलंकारों का प्रयोग पांडित्य प्रदर्शन के लिए नहीं अपितु अपने भावों की सहज अभिव्यक्ति के लिए अनायास किया है। उनकी वाणी में दोंनो प्रकार के अलंकारों का प्रयोग हुआ। उनकी वाणी में अलंकार उपदेश परक पदों में आए। इससे उनकी अभिव्यक्ति और भी सजीव हो उठी है। संत रविदास ने ब्रह्म जीव जगत, भक्ति, दर्शन आदि को निरुपित करने के लिए अनेक अलंकारों का सहज रूप में प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में संत रविदास के काव्य में अलंकार विधान पर विचार किया गया है।

मुख्य शब्द : *अलंकर, शब्दालंकार, अर्थालंकार*

भूमिका

अलंकार का अर्थ - 'अलंकरोति इति अलंकारः' अर्थात् जो अलंकृत करे उसे अलंकार कहते हैं। वामन ने 'सौंदर्यमालंकार' कहकर सौन्दर्य बढ़ाने वाले उपादान को ही अलंकार माना है।[1] आचार्य दंडी "काव्य के सौन्दर्य कारक धर्मों को अलंकार कहते हैं।"[2] आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि भावों का उत्कर्ष और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली युक्ति ही अलंकार है। अतः कहा जा सकता है कि काव्य में प्रभावकारी चमत्कार लाने वाला तत्व अलंकार है।

आचार्य केशव ने भी "भूषण बिन न विराजई, कविता वनिता मित" कहकर अलंकारों की महत्ता स्वीकार की है। संत रविदास की वाणी में अलंकारों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग हुआ है। उनकी वाणी में शब्दालंकार व अर्थालंकार दोंनो ही परिलक्षित होते हैं।

शब्दालंकार

इन अलंकारों में शब्दों के प्रयोग के कारण कोई चमत्कार उपस्थित हो जाता है और उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने से वह चमत्कार समाप्त हो जाता है। वहां पर शब्दालंकार माना जाता है। रविदास वाणी में निम्न शब्दालंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

अनुप्रास - संत कवि रविदास वाणी में सर्वत्र अनुप्रास की छटा से वाणी में संगीत का पुट व नाद सौन्दर्य का समावेश हुआ है :

"बोलि बोलता बढ़ै बियाधी, बोल अबोलै जाई
बोल बोल अबोल को पकरै, बोल बोल कूं खाई[3]
साइर सलिल सरोदिका, जल थल अधिकाई
स्वाति बूंद की आस है, पिउ पियास न जाई[4]
निरंजन निराकार निरलेपी निरविकार निरासी
काम कुटिल ताहि कहि गावत, हर-हर आवै हांसी"[5]

यमक - संत रविदास की वाणी में उपदेशात्मक तथा साधनात्मक संदर्भों को सटीकता प्रदान करने के लिए यमक अलंकार का प्रयोग हुआ है :

सुरसरी सलिल कृत बारुनी रे, संत जन करत नहीं पान
सुरा अपवित्र न अखर जल रे, सरसरि मिलत होइ नहीं आन[6]

भाई रे सहज बंदौ सोई, बिन सहज सिद्ध न होई[7]

जग में वेद बैद मानी जे[8]

श्लेष - श्लेष अलंकार शब्द और अर्थ दोनों ही प्रकार के अलंकारों से माना जाता है, जहां एक ही शब्द के कई अर्थ निकलते हों, वहां श्लेष होता है, द्रष्टव्य है-

जब लगि नदी न समुंद्र समावे, तब लगि बढ़े हे कारा
जब मन मिल्यो राम सागर सूं तक मिटी प्रकारा[9]

पुनरुक्ति प्रकाश - भाव को अधिकार रुचिकर और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए जहां शब्द का अनेक बार प्रयोग हो, वहां पुनरुक्ति अलंकार होता है, जैसे :

आयो आयो हो देवाधिदेव, तुम सरन आया
जाति ओछा पाती ओछा, ओछा जनम हमारा[10]

अर्थालंकार

संत रविदास की वाणी में भक्ति, दर्शन और अध्यात्म विषय को निरूपित करने के लिए विभिन्न अर्थालंकारों का प्रयोग हुआ है। ब्रह्म, जीव, जगत आदि के निरूपण में कवि ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टांत, उदाहरण, विरोधाभास, भ्रांतिमान, संदेह असंगति, विशेषोक्ति अलंकारों का सर्वाधिक समावेश किया है, द्रष्टव्य है :

उपमा - संत रविदास वाणी में सहज अभिव्यक्ति के लिए उपमा अलंकार का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है, जैसे :

बट के बीज जैसा आकर, पसरयौ तीनि लोक पसार[11]

रूपक - संत रविदास ने विभिन्न रूपकों के माध्यम से ब्रह्म, जीव एवं जगत की सार्थक अभिव्यक्ति की है, उनकी वाणी में रुपक अलंकार का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है, जैसे :

जल की भीति पवन का थंबा, रक्त बंद का गारा
हाड़ मांस नाड़ी को पिंजरु, पंखी बसै विचारा।[12]

रथ को चतुर चलावण हारौ[13]

चरण-कंवल ल्यौ लाइ रह्यो है, गुण गाव रविदासा
तीरथ व्रत व करौ अंदेसा, तुम्हरे चरन कंवल भरोसा[14]

रे मन मांछला संसार समुंदे, तू चित्र विचित्र बिचारि रे
जिहि गाले गलियांहीं भरीऐ, सो संग दूरि निवारि रे।[15]

उत्प्रेक्षा - संत रविदास वाणी में उत्प्रेक्षा अलंकार का भी समावेश हुआ है

सुरा अपवित्र निति गंगा जल मानिए
सुरसरि मिलत नहीं होत आन[16]

संत रविदास ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से अपनी गूढ़ भावाभिव्यंजना का परिचय दिया है, यथा-

तुम मखतूल सफेद सपीअल, हम बपुरे जस कीरा
सत्संगति मिलि रहीऐ माधउ, जैसे मधुप मखीरा[17]

तथा

जैसे भादउ खूंब राजुतु, तिस ते खरी उतावली
जैसे कुरंग नहीं पाइओ भेदु, तनि सुगंध ढूंढै प्रदेसु[18]

पुहुप मध्य ज्यूं बास बसत है त्यू सब घट रमहि रघुराई

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बाहरि खोजत जनम सिराने, मृग त्रिसना रह्यो उरझाई[19]

जैसा रंग सैंबल करि है तैसा यहु संसार
हौं रंग रंगौ महं भणे रविदास विचार साखी[20]

दृष्टांत - जहां उपमेय में उपमान का बिम्ब-प्रतिम्ब भाव होता है अर्थात जहां पर कवि कोई मिसाल या युक्ति देकर अपनी बात की सार्थकता सिद्ध करता है, वहां दृष्टांत अलंकार होता है। संत रविदास ने अपने गूढ़ ज्ञान द्वारा विभिन्न लोक प्रचलित युक्ति या कथन की मिसाल देकर अपने भावों की व्यंजना की है-

कोइल तरस अब कूं चातिग तरसत नीर
रविदास लोचै दरस कूं, प्राण परत नहीं धीर[21]

भूप न भाजै त्रिस्ना न जाई, कहौ, कौन कवन गुण होई
जौ दधि में कांजी को जांवण, तौ घ्रित, न काढ़ै कोई[22]

विरोधाभास - जहां उपमेय में उपमान का विरोध या कल्पना की जाए वहां विरोधाभास अलंकार होता है। विरोधाभास का भी रविदास वाणी में प्रयोग हुआ है- जैसे

उल्टी गंगा जमुनि महि ल्यावौ, बिनही जल मज्जन ह्वै आवौ[23]

मैलागार बेहे है भुइअंगा, बिषु अम्रितु बसहि इक संगा[24]

भ्रान्तिमान- संत रविदास ने आत्मा-परमात्मा के द्वेत भाव का भ्रम बताते हुए भ्रांतिमान अलंकार द्वारा सुन्दर अभिव्यक्ति दी है-

आदि है ऐक अंता फूनि सोई, मधि उपाधि सु कैसे
अहै पेक पै भ्रम सूं दूजौ कनक अलंक्रित जैसे[25]

माइआ दीपकु पेषि करि नर पतंग अधियाय
रविदास गुरु रा ग्यान बिनु बिरला कौ बचि जाए।[26]

सन्देह - जहां पर दुविधा बनी रहती है या वस्तु का स्थिति निर्धारण न हो सके, वहां सन्देह अलंकार होता है। संत रविदास में ऐसे अनेक प्रसंगो का समावेश हुआ है-

माया ममिता मोह लपटानो, दिन-रात उरसत जाई
सुआन प्रुच्छ कभी होई न सूधो कीजहु लाख उपाई27

कहनी कथनी ग्यान अचारा, भगती इनहूं सौ न्यारी
दोइ घोड़ा चढ़ि कौउ न पहूंचै, सतगुरु कहै पुकारी[28]

विभावना - संत रविदास वाणी में कुछ ऐसे प्रसंग भी आए है जहां कवि ने बिना कारण के कार्य की कल्पना की अभिव्यक्ति की है, जैसे-

"कागद कंबल मति मसि करि निरमल, बिन रसना निसिदिन गुण गाउं29

बिन ही जल मज्जन ह्वै आवौ[30]

विशेषोक्ति - संत रविदास वाणी में कुछ स्थल ऐसे भी आए हैं जहां कारण के होते हुए भी कार्य संपन्न नहीं होता , जैसे -

साइर सलिल सरोदिका, जल थल अधिकाई
स्वाति बूंद की आस है, पिउ पिआस न जाई[31]

कोटि बैद विध उपचरै, बाकी विधा न जाई[32]

असंगति - संत रविदास जी ने असंगति के प्रयोग द्वारा भी अपने भावों की सुन्दर व्यंजना की है, जैसे-

मूरिष मुख कमान है, कटुक वचन भयो तीर
सांचरी मारे कान मंहि, साले सगल सरीर[33]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः उपर्युक्त विवेचन के उपरांत कहा जा सकता है कि संत रविदास का लक्ष्य कोई कविता करना नहीं था अपितु अपने भावों की सहज अभिव्यंजना करना था। फिर भी उनकी वाणी में

कलात्मक तत्वों का अनायास ही समावेश हो गया है। उन्होंने अलंकारों का प्रयोग पांडित्य प्रदर्शन के लिए नहीं अपितु भावों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किया है। शब्दालंकारों व अर्थालंकारों के स्वाभाविक समावेश से उनकी अभिव्यंजना भी प्रभावशाली व सशक्त हो गई है। यही उनकी कला की विशिष्टता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. नगेन्द्र, *रीतिकाव्य की भूमिका*, पृष्ठ 26
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, 2001 पृष्ठ 143
3. बी.पी. शर्मा, *संत गुरु रविदास वाणी*, सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978 पद 26
4. वही, पद 21
5. वही, पद 12
6. वही, पद 51
7. वही, पद 69
8. वही, पद 91
9. वही, पद 4
10. वही, पद 6
11. वही, पद 2
12. वही, पद 122
13. वही, पद 62
14. वही, पद 64
15. वही, पद 59
16. वही, पद 52
17. वही, पद 65
18. वही, पद 120
19. वही, पद 167
20. वही, पद 140
21. वही, पद 142 साखी
22. वही, पद 161
23. वही, पद 75
24. वही, पद 38
25. वही, पद 71
26. वही, पद 16
27. वही, पद 164
28. वही, पद 161
29. वही, पद 94
30. वही, पद 75
31. वही, पद 21
32. वही, पद 8
33. वही, साखी, पृ. 142